Tamish Khyati

Model: Web-Milan-Phal

Order No: 121829501

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
25/05/2002	जन्म तिथि	15/01/2002
शनिवार	दिन	मंगलवार
घंटे 18:55:00	जन्म समय	17:15:00 घंटे
घटी 33:37:52	जन्म समय(घटी)	24:51:52 घटी
India	देश	India
Rohtak	स्थान	New Delhi
28:53:43 उत्तर	अक्षांश	28:36:50 उत्तर
76:36:23 पूर्व	रेखांश	77:12:31 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:34	स्थानिक संस्कार	-00:21:10 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:27:51	सूर्योदय	07:15:16
19:13:24	सूर्यास्त	17:46:01
23:53:08	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:52

वृश्चिक	लग्न	मिथुन
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	बुध
तुला	राशि	मकर
शुक्र	राशि-स्वामी	शनि
विशाखा	नक्षत्र	श्रवण
गुरु	नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
3	चरण	4
परिघ	योग	सिद्धि
वणिज	करण	कौलव
ते-तेजवन्त	जन्म नामाक्षर	खो-खोमनी
मिथुन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर
शूद्र	वर्ण	वैश्य
मानव	वश्य	जलचर
व्याघ्र	योनि	वानर
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
सर्प	वर्ग	मार्जार

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 6वर्ष 7मा 24दि		07:13:38	वृश्चि	लग्न	मिथु	25:29:37	चन्द्र 0वर्ष 3मा 13दि	
शनि		10:16:35	वृष	सूर्य	मक	01:16:10	राहु	
17/01/2009		27:47:28	तुला	चंद्र	मक	22:57:01	30/04/2009	
18/01/2028		04:10:59	मिथु	मंगल	मीन	03:35:32	30/04/2027	
शनि	21/01/2012	12:55:15	वृष व	बुध	मक	19:34:35	राहु	11/01/2012
बुध	30/09/2014	21:24:54	मिथु	गुरु व	मिथु	14:52:23	गुरु	06/06/2014
केतु	09/11/2015	12:05:48	मिथु	शुक्र	मक	01:30:38	शनि	12/04/2017
शुक्र	09/01/2019	22:38:25	वृष	शनि व	वृष	14:39:51	बुध	30/10/2019
सूर्य	22/12/2019	23:57:12	वृष व	राहु व	मिथु	03:04:38	केतु	17/11/2020
चन्द्र	22/07/2021	23:57:12	वृश्चि व	केतु व	धनु	03:04:38	शुक्र	17/11/2023
मंगल	31/08/2022	04:55:14	कुंभ	हर्ष	मक	29:17:51	सूर्य	11/10/2024
राहु	07/07/2025	17:03:23	मक व	नेप	मक	14:05:10	चन्द्र	12/04/2026
गुरु	18/01/2028	22:43:34	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	22:38:52	मंगल	30/04/2027

23:53:08 चित्रपक्षीय अयनांश 23:52:52

लग्न-चलित

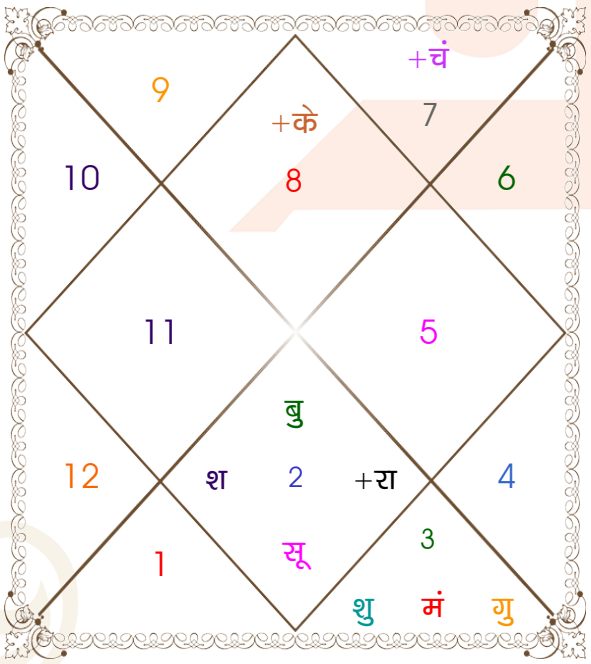

लग्न-चलित

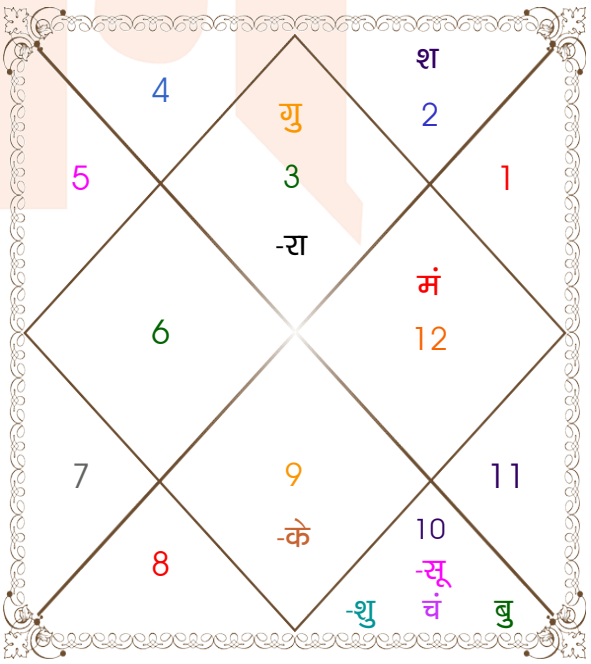

चन्द्र कुंडली

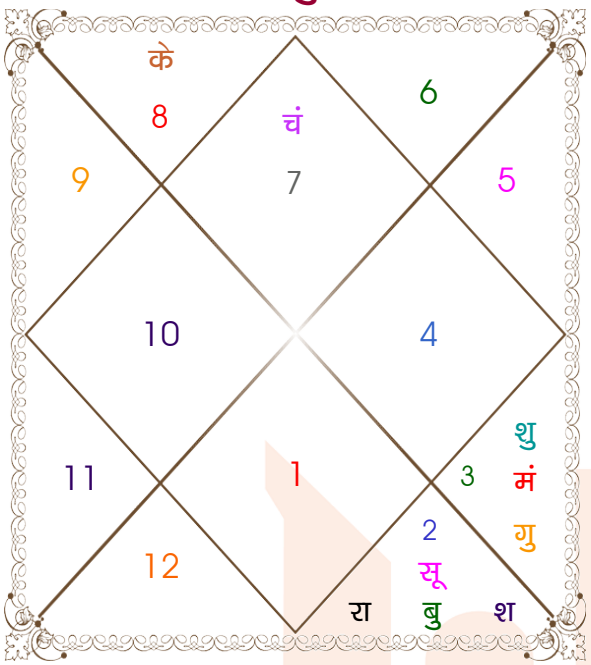

चन्द्र कुंडली

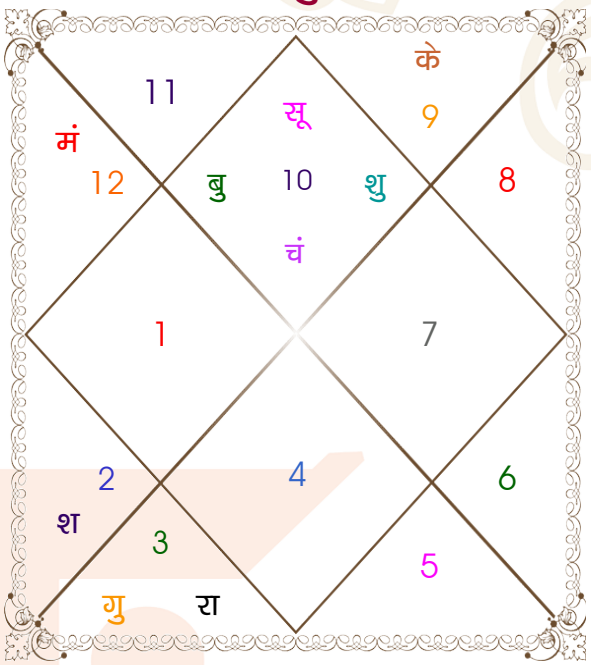

नवमांश कुंडली

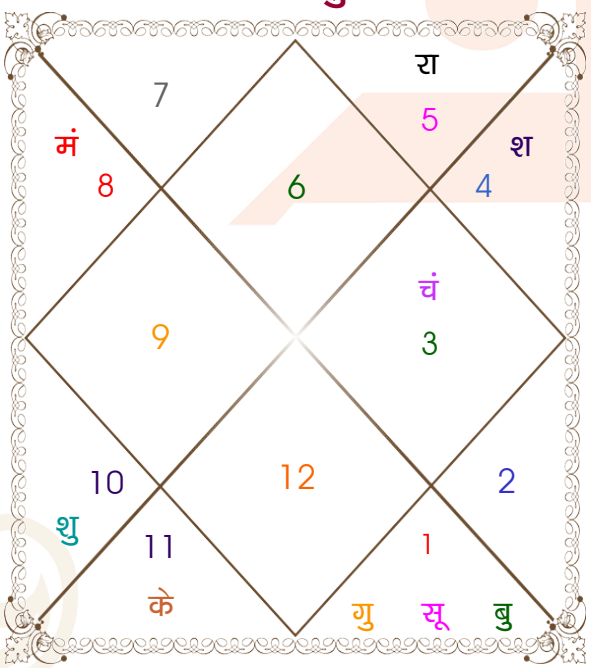

नवमांश कुंडली

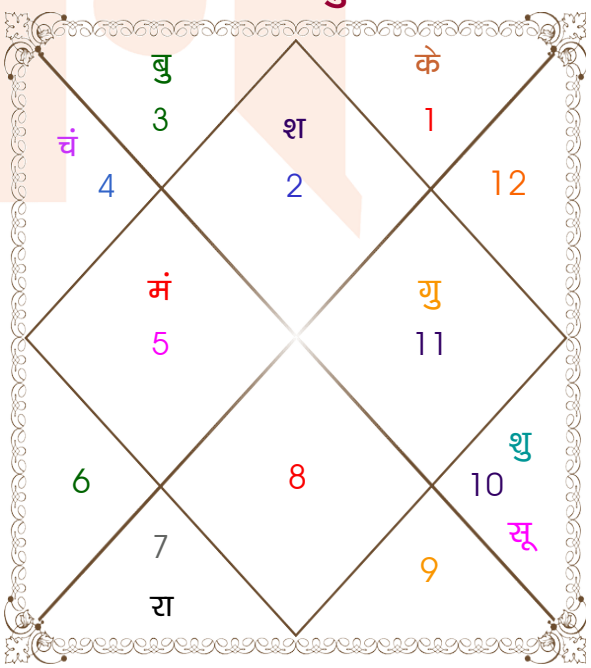

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 6 मास 11 दिन

के.पी. अयनांश : 23:47:10

फॉरच्युना : मेष 24:50:29

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृष	10:22:33	शुक्र	चंद्र	चंद्र	गुरु
चंद्र		तुला	27:53:26	शुक्र	गुरु	शुक्र	गुरु
मंगल		मिथु	04:16:57	बुध	मंगल	शुक्र	शनि
बुध	व	वृष	13:01:13	शुक्र	चंद्र	राहु	बुध
गुरु		मिथु	21:30:52	बुध	गुरु	गुरु	राहु
शुक्र		मिथु	12:11:46	बुध	राहु	शनि	राहु
शनि		वृष	22:44:23	शुक्र	चंद्र	सूर्य	चंद्र
राहु	व	वृष	24:03:10	शुक्र	मंगल	मंगल	चंद्र
केतु	व	वृश्चि	24:03:10	मंगल	बुध	मंगल	चंद्र
हर्ष		कुंभ	05:01:12	शनि	मंगल	सूर्य	राहु
नेप	व	मक	17:09:21	शनि	चंद्र	शनि	मंगल
प्लूटो	व	वृश्चि	22:49:32	मंगल	बुध	चंद्र	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	07:19:36	मंगल	शनि	बुध	शनि
2	धनु	07:40:08	गुरु	केतु	गुरु	गुरु
3	मक	11:00:55	शनि	चंद्र	चंद्र	शुक्र
4	कुंभ	15:26:34	शनि	राहु	शुक्र	शुक्र
5	मीन	17:06:43	गुरु	बुध	बुध	शुक्र
6	मेष	14:03:55	मंगल	शुक्र	शुक्र	मंगल
7	वृष	07:19:36	शुक्र	सूर्य	केतु	राहु
8	मिथु	07:40:08	बुध	राहु	राहु	बुध
9	कर्क	11:00:55	चंद्र	शनि	चंद्र	चंद्र
10	सिंह	15:26:34	सूर्य	शुक्र	शुक्र	केतु
11	कन्या	17:06:43	बुध	चंद्र	शनि	मंगल
12	तुला	14:03:55	शुक्र	राहु	बुध	गुरु

भाव कुंडली

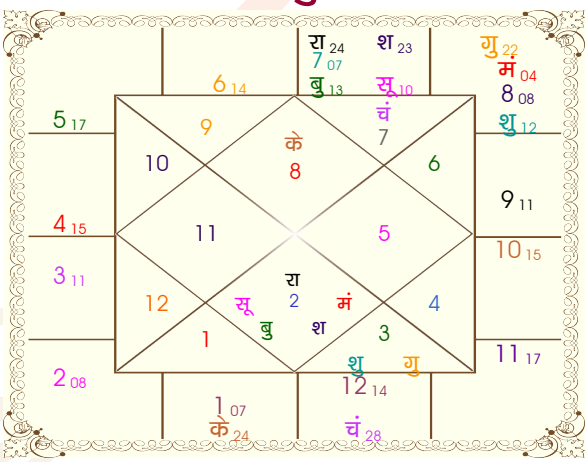

भोग्य दशा काल : चन्द्र 0 वर्ष 2 मास 16 दिन

के.पी. अयनांश : 23:46:52

फॉरच्युना : कर्क 17:16:27

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	01:22:10	शनि	सूर्य	गुरु	गुरु
चंद्र		मक	23:03:01	शनि	चंद्र	सूर्य	शनि
मंगल		मीन	03:41:32	गुरु	शनि	शनि	बुध
बुध		मक	19:40:35	शनि	चंद्र	केतु	केतु
गुरु	व	मिथु	14:58:23	बुध	राहु	केतु	गुरु
शुक्र		मक	01:36:38	शनि	सूर्य	गुरु	शनि
शनि	व	वृष	14:45:51	शुक्र	चंद्र	गुरु	शुक्र
राहु	व	मिथु	03:10:38	बुध	मंगल	शुक्र	चंद्र
केतु	व	धनु	03:10:38	गुरु	केतु	सूर्य	राहु
हर्ष		मक	29:23:51	शनि	मंगल	शनि	मंगल
नेप		मक	14:11:10	शनि	चंद्र	गुरु	शनि
प्लूटो		वृश्चि	22:44:52	मंगल	बुध	चंद्र	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	25:35:36	बुध	गुरु	बुध	शनि
2	कर्क	18:25:22	चंद्र	बुध	बुध	शनि
3	सिंह	14:20:23	सूर्य	शुक्र	शुक्र	राहु
4	कन्या	15:09:26	बुध	चंद्र	गुरु	चंद्र
5	तुला	19:52:30	शुक्र	राहु	मंगल	शुक्र
6	वृश्चि	24:21:02	मंगल	बुध	राहु	राहु
7	धनु	25:35:36	गुरु	शुक्र	बुध	शनि
8	मक	18:25:22	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
9	कुंभ	14:20:23	शनि	राहु	बुध	शनि
10	मीन	15:09:26	गुरु	शनि	गुरु	शनि
11	मेष	19:52:30	मंगल	शुक्र	राहु	चंद्र
12	वृष	24:21:02	शुक्र	मंगल	राहु	राहु

भाव कुंडली

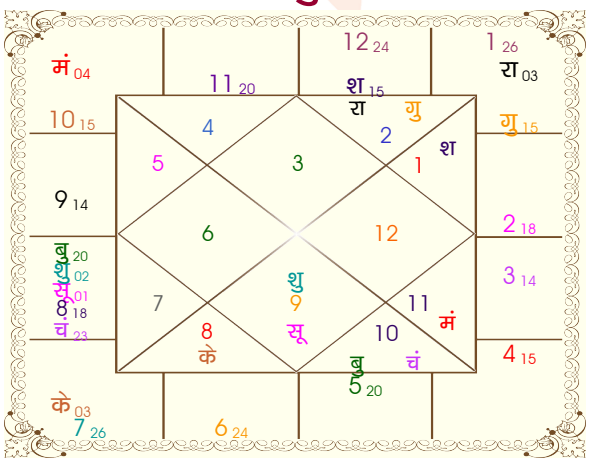

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल, राहु- केतु,
2	चंद्र- गुरु,
3	शनि-
4	शनि-
5	चंद्र- गुरु,
6	मंगल, राहु-
7	सूर्य, मंगल+ बुध, शुक्र+ शनि, राहु+ केतु,
8	चंद्र, बुध- गुरु+ शुक्र, केतु-
9	सूर्य- चंद्र- बुध- शनि-
10	सूर्य-
11	बुध- केतु-
12	सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र- शनि,

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध-
2	चंद्र, बुध- शनि-
3	सूर्य, शुक्र-
4	बुध-
5	शुक्र-
6	मंगल- राहु- केतु+
7	सूर्य+ गुरु- शुक्र+
8	चंद्र+ मंगल- बुध+ शनि+
9	मंगल+ शनि- राहु,
10	गुरु-
11	मंगल+ शनि, राहु-
12	गुरु+ शुक्र- राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7, 9- 10- 12,
चंद्र	2- 5- 8, 9- 12,
मंगल	1, 6, 7+
बुध	7, 8- 9- 11- 12,
गुरु	2, 5, 8+
शुक्र	7+ 8, 12-
शनि	3- 4- 7, 9- 12,
राहु	1- 6- 7+
केतु	1, 7, 8- 11-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3, 7+
चंद्र	2, 8+
मंगल	6- 8- 9+ 11+
बुध	1- 2- 4- 8+
गुरु	7- 10- 12+
शुक्र	3- 5- 7+ 12-
शनि	2- 8+ 9- 11,
राहु	6- 9, 11- 12,
केतु	6+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

विंशोत्तरी दशा

गुरु 6 वर्ष 7 मास 24 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
25/05/2002		17/01/2009		18/01/2028	
17/01/2009		18/01/2028		17/01/2045	
	00/00/0000	शनि	21/01/2012	बुध	16/06/2030
	00/00/0000	बुध	30/09/2014	केतु	13/06/2031
	00/00/0000	केतु	09/11/2015	शुक्र	13/04/2034
	25/05/2002	शुक्र	09/01/2019	सूर्य	17/02/2035
शुक्र	01/08/2003	सूर्य	22/12/2019	चंद्र	19/07/2036
सूर्य	19/05/2004	चंद्र	22/07/2021	मंगल	16/07/2037
चंद्र	18/09/2005	मंगल	31/08/2022	राहु	02/02/2040
मंगल	25/08/2006	राहु	07/07/2025	गुरु	10/05/2042
राहु	17/01/2009	गुरु	18/01/2028	शनि	17/01/2045

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
17/01/2045		18/01/2052		18/01/2072	
18/01/2052		18/01/2072		18/01/2078	
केतु	16/06/2045	शुक्र	20/05/2055	सूर्य	07/05/2072
शुक्र	16/08/2046	सूर्य	19/05/2056	चंद्र	05/11/2072
सूर्य	22/12/2046	चंद्र	18/01/2058	मंगल	13/03/2073
चंद्र	23/07/2047	मंगल	20/03/2059	राहु	05/02/2074
मंगल	19/12/2047	राहु	20/03/2062	गुरु	24/11/2074
राहु	05/01/2049	गुरु	18/11/2064	शनि	06/11/2075
गुरु	12/12/2049	शनि	18/01/2068	बुध	12/09/2076
शनि	21/01/2051	बुध	18/11/2070	केतु	17/01/2077
बुध	18/01/2052	केतु	18/01/2072	शुक्र	18/01/2078

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
18/01/2078		18/01/2088		18/01/2095	
18/01/2088		18/01/2095		18/01/2113	
चंद्र	18/11/2078	मंगल	15/06/2088	राहु	30/09/2097
मंगल	19/06/2079	राहु	04/07/2089	गुरु	24/02/2100
राहु	18/12/2080	गुरु	10/06/2090	शनि	01/01/2103
गुरु	19/04/2082	शनि	20/07/2091	बुध	20/07/2105
शनि	18/11/2083	बुध	16/07/2092	केतु	08/08/2106
बुध	19/04/2085	केतु	12/12/2092	शुक्र	07/08/2109
केतु	18/11/2085	शुक्र	11/02/2094	सूर्य	02/07/2110
शुक्र	20/07/2087	सूर्य	19/06/2094	चंद्र	01/01/2112
सूर्य	18/01/2088	चंद्र	18/01/2095	मंगल	18/01/2113

चन्द्र 0 वर्ष 3 मास 13 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
15/01/2002		30/04/2002		30/04/2009	
30/04/2002		30/04/2009		30/04/2027	
	00/00/0000	मंगल	26/09/2002	राहु	11/01/2012
	00/00/0000	राहु	15/10/2003	गुरु	06/06/2014
	00/00/0000	गुरु	20/09/2004	शनि	12/04/2017
	00/00/0000	शनि	30/10/2005	बुध	30/10/2019
	00/00/0000	बुध	27/10/2006	केतु	17/11/2020
	00/00/0000	केतु	25/03/2007	शुक्र	17/11/2023
	00/00/0000	शुक्र	24/05/2008	सूर्य	11/10/2024
	15/01/2002	सूर्य	29/09/2008	चंद्र	12/04/2026
सूर्य	30/04/2002	चंद्र	30/04/2009	मंगल	30/04/2027

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
30/04/2027		30/04/2043		30/04/2062	
30/04/2043		30/04/2062		30/04/2079	
गुरु	18/06/2029	शनि	03/05/2046	बुध	26/09/2064
शनि	30/12/2031	बुध	10/01/2049	केतु	23/09/2065
बुध	06/04/2034	केतु	19/02/2050	शुक्र	24/07/2068
केतु	13/03/2035	शुक्र	21/04/2053	सूर्य	30/05/2069
शुक्र	11/11/2037	सूर्य	03/04/2054	चंद्र	30/10/2070
सूर्य	30/08/2038	चंद्र	02/11/2055	मंगल	27/10/2071
चंद्र	30/12/2039	मंगल	11/12/2056	राहु	15/05/2074
मंगल	05/12/2040	राहु	18/10/2059	गुरु	20/08/2076
राहु	30/04/2043	गुरु	30/04/2062	शनि	30/04/2079

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
30/04/2079		30/04/2086		01/05/2106	
30/04/2086		01/05/2106		01/05/2112	
केतु	27/09/2079	शुक्र	30/08/2089	सूर्य	19/08/2106
शुक्र	26/11/2080	सूर्य	30/08/2090	चंद्र	17/02/2107
सूर्य	03/04/2081	चंद्र	30/04/2092	मंगल	25/06/2107
चंद्र	02/11/2081	मंगल	30/06/2093	राहु	19/05/2108
मंगल	31/03/2082	राहु	30/06/2096	गुरु	07/03/2109
राहु	18/04/2083	गुरु	01/03/2099	शनि	17/02/2110
गुरु	24/03/2084	शनि	01/05/2102	बुध	25/12/2110
शनि	03/05/2085	बुध	01/03/2105	केतु	01/05/2111
बुध	30/04/2086	केतु	01/05/2106	शुक्र	01/05/2112

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
07/07/2025		18/01/2028		16/06/2030	
18/01/2028		16/06/2030		13/06/2031	
गुरु	07/11/2025	बुध	22/05/2028	केतु	07/07/2030
शनि	03/04/2026	केतु	12/07/2028	शुक्र	05/09/2030
बुध	12/08/2026	शुक्र	06/12/2028	सूर्य	23/09/2030
केतु	05/10/2026	सूर्य	19/01/2029	चंद्र	24/10/2030
शुक्र	08/03/2027	चंद्र	02/04/2029	मंगल	14/11/2030
सूर्य	23/04/2027	मंगल	23/05/2029	राहु	07/01/2031
चंद्र	09/07/2027	राहु	02/10/2029	गुरु	24/02/2031
मंगल	01/09/2027	गुरु	28/01/2030	शनि	23/04/2031
राहु	18/01/2028	शनि	16/06/2030	बुध	13/06/2031

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
11/10/2024		12/04/2026		30/04/2027	
12/04/2026		30/04/2027		18/06/2029	
चंद्र	26/11/2024	मंगल	04/05/2026	गुरु	12/08/2027
मंगल	28/12/2024	राहु	01/07/2026	शनि	14/12/2027
राहु	20/03/2025	गुरु	21/08/2026	बुध	02/04/2028
गुरु	01/06/2025	शनि	21/10/2026	केतु	18/05/2028
शनि	27/08/2025	बुध	14/12/2026	शुक्र	24/09/2028
बुध	12/11/2025	केतु	05/01/2027	सूर्य	02/11/2028
केतु	14/12/2025	शुक्र	10/03/2027	चंद्र	06/01/2029
शुक्र	15/03/2026	सूर्य	29/03/2027	मंगल	21/02/2029
सूर्य	12/04/2026	चंद्र	30/04/2027	राहु	18/06/2029

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
13/06/2031		13/04/2034		17/02/2035	
13/04/2034		17/02/2035		19/07/2036	
शुक्र	03/12/2031	सूर्य	28/04/2034	चंद्र	02/04/2035
सूर्य	23/01/2032	चंद्र	24/05/2034	मंगल	02/05/2035
चंद्र	19/04/2032	मंगल	11/06/2034	राहु	18/07/2035
मंगल	18/06/2032	राहु	28/07/2034	गुरु	25/09/2035
राहु	20/11/2032	गुरु	07/09/2034	शनि	16/12/2035
गुरु	07/04/2033	शनि	27/10/2034	बुध	28/02/2036
शनि	18/09/2033	बुध	10/12/2034	केतु	29/03/2036
बुध	12/02/2034	केतु	28/12/2034	शुक्र	23/06/2036
केतु	13/04/2034	शुक्र	17/02/2035	सूर्य	19/07/2036

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
18/06/2029		30/12/2031		06/04/2034	
30/12/2031		06/04/2034		13/03/2035	
शनि	11/11/2029	बुध	25/04/2032	केतु	26/04/2034
बुध	22/03/2030	केतु	12/06/2032	शुक्र	22/06/2034
केतु	15/05/2030	शुक्र	28/10/2032	सूर्य	09/07/2034
शुक्र	16/10/2030	सूर्य	09/12/2032	चंद्र	06/08/2034
सूर्य	02/12/2030	चंद्र	16/02/2033	मंगल	26/08/2034
चंद्र	17/02/2031	मंगल	05/04/2033	राहु	16/10/2034
मंगल	12/04/2031	राहु	07/08/2033	गुरु	30/11/2034
राहु	29/08/2031	गुरु	26/11/2033	शनि	23/01/2035
गुरु	30/12/2031	शनि	06/04/2034	बुध	13/03/2035

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
19/07/2036		16/07/2037		02/02/2040	
16/07/2037		02/02/2040		10/05/2042	
मंगल	09/08/2036	राहु	03/12/2037	गुरु	23/05/2040
राहु	02/10/2036	गुरु	06/04/2038	शनि	01/10/2040
गुरु	20/11/2036	शनि	31/08/2038	बुध	26/01/2041
शनि	16/01/2037	बुध	10/01/2039	केतु	15/03/2041
बुध	08/03/2037	केतु	06/03/2039	शुक्र	31/07/2041
केतु	29/03/2037	शुक्र	08/08/2039	सूर्य	11/09/2041
शुक्र	29/05/2037	सूर्य	23/09/2039	चंद्र	19/11/2041
सूर्य	16/06/2037	चंद्र	10/12/2039	मंगल	06/01/2042
चंद्र	16/07/2037	मंगल	02/02/2040	राहु	10/05/2042

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
13/03/2035		11/11/2037		30/08/2038	
11/11/2037		30/08/2038		30/12/2039	
शुक्र	22/08/2035	सूर्य	25/11/2037	चंद्र	09/10/2038
सूर्य	10/10/2035	चंद्र	20/12/2037	मंगल	07/11/2038
चंद्र	30/12/2035	मंगल	06/01/2038	राहु	19/01/2039
मंगल	25/02/2036	राहु	19/02/2038	गुरु	25/03/2039
राहु	20/07/2036	गुरु	29/03/2038	शनि	10/06/2039
गुरु	27/11/2036	शनि	15/05/2038	बुध	18/08/2039
शनि	30/04/2037	बुध	25/06/2038	केतु	15/09/2039
बुध	15/09/2037	केतु	12/07/2038	शुक्र	06/12/2039
केतु	11/11/2037	शुक्र	30/08/2038	सूर्य	30/12/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
10/05/2042		17/01/2045		16/06/2045	
17/01/2045		16/06/2045		16/08/2046	
शनि	13/10/2042	केतु	26/01/2045	शुक्र	26/08/2045
बुध	01/03/2043	शुक्र	20/02/2045	सूर्य	16/09/2045
केतु	28/04/2043	सूर्य	27/02/2045	चंद्र	21/10/2045
शुक्र	08/10/2043	चंद्र	12/03/2045	मंगल	15/11/2045
सूर्य	27/11/2043	मंगल	21/03/2045	राहु	18/01/2046
चंद्र	17/02/2044	राहु	12/04/2045	गुरु	16/03/2046
मंगल	14/04/2044	गुरु	02/05/2045	शनि	23/05/2046
राहु	08/09/2044	शनि	25/05/2045	बुध	22/07/2046
गुरु	17/01/2045	बुध	16/06/2045	केतु	16/08/2046

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
30/12/2039		05/12/2040		30/04/2043	
05/12/2040		30/04/2043		03/05/2046	
मंगल	19/01/2040	राहु	15/04/2041	शनि	21/10/2043
राहु	10/03/2040	गुरु	10/08/2041	बुध	25/03/2044
गुरु	24/04/2040	शनि	27/12/2041	केतु	28/05/2044
शनि	17/06/2040	बुध	30/04/2042	शुक्र	27/11/2044
बुध	05/08/2040	केतु	20/06/2042	सूर्य	21/01/2045
केतु	25/08/2040	शुक्र	13/11/2042	चंद्र	23/04/2045
शुक्र	20/10/2040	सूर्य	27/12/2042	मंगल	26/06/2045
सूर्य	06/11/2040	चंद्र	10/03/2043	राहु	08/12/2045
चंद्र	05/12/2040	मंगल	30/04/2043	गुरु	03/05/2046

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
16/08/2046		22/12/2046		23/07/2047	
22/12/2046		23/07/2047		19/12/2047	
सूर्य	22/08/2046	चंद्र	08/01/2047	मंगल	31/07/2047
चंद्र	02/09/2046	मंगल	21/01/2047	राहु	23/08/2047
मंगल	09/09/2046	राहु	22/02/2047	गुरु	12/09/2047
राहु	28/09/2046	गुरु	22/03/2047	शनि	05/10/2047
गुरु	15/10/2046	शनि	25/04/2047	बुध	26/10/2047
शनि	05/11/2046	बुध	25/05/2047	केतु	04/11/2047
बुध	23/11/2046	केतु	06/06/2047	शुक्र	29/11/2047
केतु	30/11/2046	शुक्र	12/07/2047	सूर्य	06/12/2047
शुक्र	22/12/2046	सूर्य	23/07/2047	चंद्र	19/12/2047

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
03/05/2046		10/01/2049		19/02/2050	
10/01/2049		19/02/2050		21/04/2053	
बुध	19/09/2046	केतु	03/02/2049	शुक्र	31/08/2050
केतु	16/11/2046	शुक्र	11/04/2049	सूर्य	28/10/2050
शुक्र	29/04/2047	सूर्य	02/05/2049	चंद्र	01/02/2051
सूर्य	17/06/2047	चंद्र	04/06/2049	मंगल	10/04/2051
चंद्र	07/09/2047	मंगल	28/06/2049	राहु	30/09/2051
मंगल	03/11/2047	राहु	28/08/2049	गुरु	02/03/2052
राहु	30/03/2048	गुरु	21/10/2049	शनि	01/09/2052
गुरु	08/08/2048	शनि	24/12/2049	बुध	12/02/2053
शनि	10/01/2049	बुध	19/02/2050	केतु	21/04/2053

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
19/12/2047		05/01/2049		12/12/2049	
05/01/2049		12/12/2049		21/01/2051	
राहु	14/02/2048	गुरु	20/02/2049	शनि	14/02/2050
गुरु	05/04/2048	शनि	15/04/2049	बुध	13/04/2050
शनि	05/06/2048	बुध	02/06/2049	केतु	06/05/2050
बुध	29/07/2048	केतु	22/06/2049	शुक्र	13/07/2050
केतु	21/08/2048	शुक्र	18/08/2049	सूर्य	02/08/2050
शुक्र	24/10/2048	सूर्य	04/09/2049	चंद्र	05/09/2050
सूर्य	12/11/2048	चंद्र	02/10/2049	मंगल	28/09/2050
चंद्र	14/12/2048	मंगल	22/10/2049	राहु	28/11/2050
मंगल	05/01/2049	राहु	12/12/2049	गुरु	21/01/2051

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
21/04/2053		03/04/2054		02/11/2055	
03/04/2054		02/11/2055		11/12/2056	
सूर्य	08/05/2053	चंद्र	21/05/2054	मंगल	26/11/2055
चंद्र	06/06/2053	मंगल	24/06/2054	राहु	25/01/2056
मंगल	26/06/2053	राहु	18/09/2054	गुरु	19/03/2056
राहु	17/08/2053	गुरु	05/12/2054	शनि	22/05/2056
गुरु	03/10/2053	शनि	06/03/2055	बुध	19/07/2056
शनि	27/11/2053	बुध	27/05/2055	केतु	11/08/2056
बुध	15/01/2054	केतु	30/06/2055	शुक्र	18/10/2056
केतु	04/02/2054	शुक्र	04/10/2055	सूर्य	07/11/2056
शुक्र	03/04/2054	सूर्य	02/11/2055	चंद्र	11/12/2056

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

7	मूलांक	6
7	भाग्यांक	2
2, 3, 6, 7	मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 2
4, 5, 8	शत्रु अंक	1, 7, 8
25,34,43,52,61	शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
रवि, सोम, मंगल	शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मकर, मिथुन	मित्र राशि	कन्या, तुला
कुम्भ, कर्क, कन्या	मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
लक्ष्मी	अनुकूल देवता	नृसिंह
मूंगा	शुभ रत्न	पन्ना
संगमूंगी	शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
मोती	भाग्य रत्न	नीलम
ताम्र	शुभ धातु	कांसा
रक्त	शुभ रंग	हरित
दक्षिण	शुभ दिशा	उत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन	दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
मल्का	दान अन्न	मूँग
घी	दान द्रव्य	घी

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Tamish

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Khyati

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Tamish

जीवन रत्नः	मूंगा	दुर्घटना से बचाव, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मोती	कम खर्च, भाग्योदय
कारक रत्नः	माणिक्य	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति

Khyati

जीवन रत्नः	पन्ना	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	नीलम	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
कारक रत्नः	हीरा	दुर्घटना से बचाव, कम खर्च, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	लहसुनिया	दम्पति, स्वास्थ्य

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/05/2002-22/07/2002
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती प्रथम ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती तृतीय ढैया	21/07/2022-24/03/2025
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती प्रथम ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती तृतीय ढैया	17/02/2052-09/09/2054
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती प्रथम ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081
साढेसाती तृतीय ढैया	18/08/2081-09/03/2084
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/05/2086-11/11/2088

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	अल्प बचत

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Tamish

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग अनुदित रूप में विद्यमान है। लेकिन यह राहु/केतु के साथ सूर्य/चन्द्र होने के कारण विशेष प्रभावशाली है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहता है। जीवन साथी से विछोह एवं प्रेम प्रसंग में असफलता मिलती है। जातक को प्रायः मनोनुकूल स्त्री का अभाव रहता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है तथा घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण साझेदारी के कामों में जातक को विशेष रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में व्यवधान आ जाता है। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। इस योग के प्रभाव से जातक लालची प्रवृत्ति के हो जाते हैं और लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन भी हो जाते हैं। जातक अनेक शत्रुओं से घिरा रहता है एवं वे लोग षड्यन्त्र रचते रहते हैं। जिसमें जातक को विशेष रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। यहाँ तक कि जातक को कारावास या जेलयात्रा करना पड़ती है।

इसके प्रभाव से जातक को इन्द्रियजन्य गुप्तरोग जीवन पर्यन्त परेशान करता रहता है। जिसमें अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है और जातक यदि किसी को धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान में दे देता है या वह स्वतः नष्ट हो जाती है। परिणामस्वरूप पैतृक धन का सुख प्राप्त नहीं होता। जातक को किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती है। इस योग के प्रभाव से पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रूख अपनाना चाहिये, तभी गृहस्थ जीवन सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. शुभ मुहूर्त में शिवलिंग पर ताम्बे का सर्प अनुष्ठानपूर्वक समर्पित करें।
3. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में मसूर की दाल सात बार प्रवाहित करें।
4. शुभ मुहूर्त में एकाक्षी नारियल अपने ऊपर से सात बार उतारकर सात बुधवार के दिन यमुना जी या बहते पानी में प्रवाहित करें।
5. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित लहसुनिया धारण करें।
7. केतु मन्त्र का 18 अट्ठारह हजार (18000) जप करें या करवायें। केतु की दशा अन्तर्दशा में करवाना अधिक श्रेयष्कर है।
8. एक वर्ष तक गणपत्यथर्वशीर्ष का नित्यपाठ करें।
9. कम्बल, धूम्रवस्त्र, शस्त्र, सप्तधान्य, तेल आदि शुभ मुहूर्त्त में समय-समय पर दान करें।
10. सात शनिवार को देवदारु, सरसों तथा लोहवान इन तीनों को उबाल कर स्नान करें।
11. शयनकक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग जीवन भर करें।
12. सर्वतो भद्र मण्डल यन्त्र को पूजित कर धारण करें।
13. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें।काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Khyati

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का ह्रास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक

चमत्कारिक समय आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	वानर	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	16.50		

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Khyati का नक्षत्र श्रवण है।

Tamish का वर्ग सर्प है तथा Khyati का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Tamish और Khyati का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Tamish मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु Tamish कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Khyati मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

Tamish तथा Khyati में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Tamish का वर्ण शूद्र है तथा Khyati का वर्ण वैश्य है। क्योंकि Khyati का वर्ण Tamish के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। Khyati अति स्वार्थी तथा धन-लोलुप होगी। वह हमेशा दूसरों की कीमत पर सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति करती रहेगी। यह Khyati अपने पति, बच्चों तथा परिवार के लोगों की न तो चिन्ता करेगी और न ही देखभाल। लड़ाई-झगड़ा करके यह हमेशा घर के लोगों का जीना दूभर कर सकती है।

वश्य

Tamish का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Khyati का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें Tamish एवं Khyati दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः Tamish Khyati पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि Tamish हमेश Khyati के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

Tamish की तारा क्षेम तथा Khyati की तारा वध है। Khyati की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह Tamish एवं Khyati दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। Khyati अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

Tamish की योनि व्याघ्र है तथा Khyati की योनि वानर है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि

होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Tamish एवं Khyati दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Tamish एवं Khyati के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण Tamish एवं Khyati जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

Tamish का गण राक्षस तथा Khyati का गण देव है। अर्थात Khyati का गण Tamish के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण Tamish निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही Tamish का Khyati के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। Khyati हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

Tamish से Khyati की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है तथा Khyati से Tamish की राशि दशम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण Tamish परिश्रमी एवं अपने व्यवसाय में काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय में लगन, निष्ठा एवं मेहनत के कारण उन्हें सभी से प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर Khyati घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवं सब का ध्यान रखने तथा बड़ों को सम्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के सदस्यों की आंखों का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, सहयोग एवं सामंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

Tamish की नाड़ी अन्त्य है तथा Khyati की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Tamish एवं Khyati की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर में श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पत्ति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके प्रभाववश संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वांस की तकलीफ, दमा जैसी बीमारियां तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक रोग, सुस्त

विकास एवं निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

Tamish की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला तथा Khyati की राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर राशि है। अतः इसके प्रभाव से Tamish एवं Khyati का दाम्पत्य जीवन में सामान्यतया मतभेद रहेगा तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहने के लिए यत्नशील रहेंगे। अतः मिलान सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा।

Tamish की राशि का स्वामी शुक्र तथा Khyati की जन्म राशि का स्वामी शनि परस्पर मित्र राशियों में पड़ते हैं। अतः सुखी वैवाहिक जीवन के लिए यह स्थिति शुभ रहेगी। इसके प्रभाव से Tamish और Khyati के मध्य सहयोग सदभाव तथा समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। वे एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे फलतः परस्पर संबधों में मधुरता बनी रहेगी।

Tamish और Khyati की राशियां परस्पर चतुर्थ तथा दशम में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से दाम्पत्य जीवन में सुख शांति रहेगी तथा Tamish और Khyati सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ होंगे। वे एक दूसरे की स्वतंत्रता तथा अस्तित्व का पूर्ण सम्मान करेंगे जिससे आपस में समानता एवं सदभाव का व्यवहार रहेगा तथा समय सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Tamish का वश्य मानव तथा Khyati का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में स्वाभाविक शत्रुता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में असमानता होगी। साथ ही शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं अलग अलग होंगी जिससे काम संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

Tamish का वर्ण शूद्र तथा Khyati का वर्ण वैश्य है। अतः Tamish किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा Khyati की प्रवृति धनार्जन के प्रति अधिक रहेगी तथा वणिक बुद्धि से अपने कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी।

धन

Tamish और Khyati दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Tamish और Khyati अन्त्य नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। अतः एक ही नाड़ी में उत्पन्न होने के कारण उनका स्वास्थ्य नाड़ी दोष से प्रभावित होगा तथा शारीरिक रूप से दोनों अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। इसका मुख्य प्रभाव Khyati पर रहेगा जिससे वह गले तथा फेफड़ों से सम्बंधित परेशानी महसूस करेंगी। साथ ही कफ या शीतादि से भी उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। मंगल के दुष्प्रभाव से भी Khyati को धातु या गुप्त रोगों से परेशानी रहेगी जिससे मासिक धर्म सम्बन्धी अनियमितता भी हो सकती है। अतः मंगल के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए Tamish को नियमित रूप से हनुमान जी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Tamish और Khyati का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Tamish और Khyati के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Khyati के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Khyati को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Khyati को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Tamish और Khyati सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Tamish और Khyati का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Khyati के अपने सास से संबध सामान्य ही रहेंगे तथा विशिष्ट मधुरता के भाव की समय समय पर न्यूनता का आभास होगा परन्तु आपसी सामंजस्य से किंचित अनुकूलता इसमें बनाए रखने में दोनों समर्थ रहेंगे। यदा कदा इनके मध्य मतभेद तथा तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह क्षणिक होगा एवं गंभीर नहीं होगा। साथ ही Khyati सास को अपने माता के समान सेवा तथा सम्मान प्रदान करेंगी।

अपने विनम्र स्वभाव सामंजस्य की प्रवृति तथा सेवा भाव के कारण ससुर की

प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से संबधों में तनाव रहेगा तथा आपस में आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु यदि Khyati किंचित धैर्य एवं सामंजस्य से कार्य ले तो इनसे संबधों में मधुरता उत्पन्न हो सकती है तथा वे भी Khyati को यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

इस प्रकार सास ससुर का दृष्टि कोण Khyati के प्रति सामान्यतया अच्छा रहेगा एवं परिवार के सदस्य के रूप में वे उसे स्वीकार करेंगे ।

ससुराल-श्री

Tamish तथा सास के संबधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि Tamish तथा इनकी सास आपसी सामंजस्य तथा बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों की मधुरता में वृद्धि हो सकती है।

लेकिन ससुर के साथ में Tamish के संबध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही उनसे पिता के समान ही व्यवहार करेंगे। साथ ही वे भी Tamish को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। Tamish समय समय पर अपने ससुर से आवश्यक तथा बहुमूल्य सलाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु साले तथा सालियों के साथ में संबधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आपस में स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से ससुरालवालों का दृष्टिकोण Tamish के प्रति अनुकूल ही रहेगा।

Tamish

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृश्चिक लग्न में हुआ था। आपके जन्म के समय मेदिनीय क्षितिज पर कन्या राशि का नवमांश एवं वृश्चिक राशि का द्रेष्काण भी उदित था। यह नक्षत्रीय समन्वयन इसका सूचक है कि आप वैदेशिक यात्रा करेंगे। यदि आप अपने कार्य कुशलता को समुचित रूप से प्रस्तुत किया तो ऐसी आशा है कि आपको विदेश में पुनर्वासित होने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। सामान्यतया यह अस्थिरता का प्रतीक है कि आप अनेको बार वैदेशिक भ्रमण करेंगे क्योंकि आपमें अत्यंत ही भ्रमण करने की लालशा विद्य मान है।

आपका जनसामान्य के साथ अपरिवर्तनीय कपट पूर्ण व्यवहार होता रहेगा। आप प्रसन्नचित मुद्रा में अति मधुर भाषा में महत्वपूर्ण बाते करेंगे। आप सदैव विभिन्न प्रकार से अनेक मनोदशा से युक्त हृदय को संतुष्ट करने वाली बातें करेंगे। आप किसी भी व्यक्ति के साथ व्यवसायिक व्यवहार से ऊपर उठने अर्थात् उन्नति करने के उद्देश्य से बात करने के पश्चात यह महसूस करते हैं।

आप अपनी व्यवसायिक उन्नति एवं अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए किसी भी प्रकार का आचरण कर किसी भी हद तक जा सकते हैं।

आप सांसारिक सुखों की प्राप्ति एवं प्रसन्नता हेतु अच्छी प्रकार से विज्ञ हैं। आप अपने लाभदायक उपलब्धि हेतु तथा धन संचय हेतु अपने संबंधित व्यक्तियों को व्यवहार में लाएंगे। एक बार यदि धन प्राप्ति में सफल हो गए तो पुनः अपने संबंधी अथवा मित्रों को किसी भी प्रकार से सहायता करने में कोई अनिच्छा नहीं दिखाएंगे।

व्यवसायों में आपके लिए अनुकूल पेशा फिल्म अभिनेता, माइनिंग अभियंत्रिकी का पद उत्तम एवं लाभप्रद होगा। आप कृषि कार्य, कृषि उत्पादन एवं तेल इंजिन आदि का व्यवसाय करेंगे।

आप सदैव अपने परिवार की अच्छी सेवा किस तरह से किया जाए। ऐसा चिंतन करते हैं। आप किसी भी प्रकार की दुर्भावनाओं को त्याग कर अनेक प्रकार से अतिरिक्त समय निकाल कर अपने पारिवारिक सदस्यों की प्रसन्नता देना ही अपना लक्ष्य समझेंगे। आप एक समझदार, सहायक पत्नी एवं उदीयमान संतान को प्राप्त करने के संबंध में भाग्यशाली हैं। यदि आप अपने लिए जीवन संगिनी का चयन करना चाहें तो जिस जातक का जन्म वृश्चिक, मीन, कर्क, मकर, वृष तथा कन्या राशि में हुआ हों उनके साथ आपका सामंजस्य पूर्ण जीवन व्यतीत हो सकता हैं।

आप परिष्कृत ढंग से किसी भी प्रकार की कपटपूर्ण युक्ति में विश्वास रखते हो। इस प्रकार आप अपने धन का थोड़ा बहुत अंश भी अपव्यय कर दिए तो परिणाम स्वरूप आपको

धन का अभाव हो जाएगा। अतः कुछ भी बचत करना चाहिए। यदि आप अपने अतिरिक्त अपव्ययकारी आदतों का त्याग नहीं कर सकें तो आपके बैंक में यथेष्ठ धन जमा नहीं हो सकेगा।

आपके लिए अनुकूल व्यवसाय इंजिनीयरिंग, कृषि कार्य, चर्मोउद्योग एवं तेल इंजिन का कार्य व्यवसाय आदि लाभकारी प्रतीत होता है। उपरोक्त व्यवसायों में अपनी अभिरूचि के अनुसार व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। इन व्यवसायों में जिस व्यवसाय से आप संबंधित हैं उसे भी करते रहने से लाभ होगा। यदि आप अभिनय के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करें अथवा साहस करे तो यह कार्य भी अनुकूल हैं। वैसे स्वर्ण माइंस का कार्य अथवा स्वर्ण जेवरात बनाने का कार्य भी कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परंतु कुछ वर्षो के बाद ऐसी आशंका है कि आप कुछ रोगों से आक्रांत हो सकते है। यथा ग्रंथि रोग एवं अनिंद्रा रोग का दुष्प्रभाव पड़ सकता है। अस्तु आपको पहले ही सुरक्षात्मक कदम उठाना उत्तम है।

साप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

आपके लिए अंकों में लाभदायक एवं समय को अनुकूल बनाने वाला अंक 1, 2, 3, 4, 7 एवं 9 अंक है। परंतु अंक 5, 6 एवं 8 अंक त्यागनीय है।

आपके लिए रंगों में सफेद रंग, हरा एवं नीला रंग अनुकूल नहीं हैं। स्पष्टतः आपके लिए रंग पीला, लाल, नारंगी, एवं क्रीम रंग अनुकूल एवं मनभावन है।

Khyati

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ था। आपके जन्म समय मिथुन लग्न के साथ-साथ वृषभ का नवमांश एवं कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। आपके जन्म प्रभाव से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भाग्यशाली महिला हैं। क्योंकि आप आरामदायक एवं प्रसन्नतम जीवन व्यतीत करेंगी। परंतु आप कार्य करने से विमुख हो जाती हैं फिर आप किस प्रकार उपयुक्त कार्य सुनिश्चित कर सकेंगी। अतः आप कार्य के संबंध में पूर्णरूपेण विचार कर उपयुक्त एवं अनुकल कार्य सुनिश्चित कर लें।

आपकी ढुल-मुल नीति के कारण आप मानसिक रूप से व्यस्त रहती हैं एवं प्रतिक्षण अन्य लुभावने कार्य-व्यवसाय को प्रारंभ करने हेतु व्यग्रता पूर्वक प्रवृत हो जाती हैं। इसलिए आप अधीर होकर, तत्काल ही परिणाम प्राप्त करना चाहती हैं। जिस वजह से आप प्रलोभन में पड़ कर अनेकों कार्यों को अपूर्ण छोड़ देती हैं। फलस्वरूप आपके कठिन श्रम से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। अतः आप भविष्यकाल के लिए निर्णय करके सुदृढता पूर्वक कार्य संपादन करें।

आप में आश्चर्य जनक ग्रहणात्मक शक्ति विद्यमान है। आप दूसरो की बातों को

समझने एवं ग्रहण करने में समर्थ हैं। आप किसी भी प्रकार का अंदाज लगाने के बाद भी अपने अनुकूल और विचार पूर्वक कार्य संपादन करती हैं।

आपके पास लोग निर्देशन प्राप्त करने तथा आपकी राय जानने आयेंगे। सामान्यतया किसी भी वस्तु विषय में आपका निर्णय ले लेना तथा पुनः निर्णय बदल देना यह उपयुक्त है।

आपका अच्छा स्वभाव आपको अपने मित्रों एवं संबंधियों के मध्य प्रसिद्धि प्रदान करता हैं। आपके संबंधित सभी लोग आपको प्रतिष्ठित करते हैं। अर्थात् प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। अन्य दूसरी बात यह है कि आपकी प्रसिद्धि आपको तेज, कुशग्र बुद्धि का, निष्कपट, विश्वासी एवं दानशील प्रवृत्ति का बनाता है।

आप अपनी उच्च महत्वकांक्षा की प्राप्ति हेतु समर्पित हो कर कोई भी कार्य प्रारंभ करें। आप चांद को स्पर्श करने की अभिलाषा नही करती परंतु आप कुछ भी चाहे जो कुछ भी प्राप्त करके ही संतुष्टि एवं प्रसन्नता का अनुभव करना चाहती हैं।

यदि आप एकाग्रता पूर्वक कार्य संपादन करें तो आपके अपने रास्ते से धन की प्राप्ति होगी। आप मुख्यतः अपने जीवन के 25वें वर्ष में अति समृद्ध हो जाएंगे। साथ ही धन का अपव्यय निरर्थक हो जाने से बहुत बड़ी उदासीनता एवं चिंता का कारण भी बनेगा।

आप पारिवारिक सदस्यों के साथ बहुत आरामदेह एवं सुखप्रद जीवन बिताएंगी। आपका शांति प्रदायक अपना भवन होगा तथा बच्चों के साथ अनेक प्रकार से सुविधाजनक एवं आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगी। उत्तम तो यह है कि आप अपने लिए अनुकूल जीवन संगी का चयन कर लें जिसका जन्म लग्न/राशि तुला, कुंभ, सिंह एवं मेष राशि हो।

आप भ्रमण प्रिय हैं। आप अपने मित्र मंडली का विस्तार करेंगी। आपके संपर्क के अनेक मित्रगण विस्तृत रूपेण पूर्ण समर्पित भाव से आपका सहयोग करेंगे।

स्पष्टतया आपके उत्तम स्वास्थ्य की सुनिश्चितता बनी हुई है। परंतु आपको संभाव्य शारीरिक आघात के प्रति रक्षित करना चाहिए। ताकि यक्ष्मा तपेदिक, श्वांस नली की विकृति एवं उदर संबंधी विकृति रोग की परेशानी से सुरक्षित रह सकें।

आपके लिए पेशा, वकालत, शैक्षणिक कार्य, पुस्तक प्रकाशन एवं पत्रकारिता के व्यवसाय अनुकूल हैं। आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

आपके लिए लाभदायक, प्रभावी एवं अनुकूल अंक 3 एवं 7 अंक है। इसके अतिरिक्त अंक 4 एवं अंक 8 सर्वथा प्रतिकूल अंक है।

आप सफेद रंग के प्रति आकर्षित हैं परंतु इसे त्यागकर अपने लिए अनुकूल रंग पीला गुलाबी, बैगनी, हरा एवं नीला रंग के वस्त्रादि का व्यवहार करें। काला एवं लाल रंग

आपके लिए प्रतिकूल रंग है।